DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-4 ,UNIT-2,CONTRIBUTION OF JAMES ROWLAND ANGELL IN CHICAGO SCHOOL
LECTURE-18

शिकागो स्कूल में जेम्स राँलैड एंजिल का योगदान:-

(CONTIBUTION OF JAMES ROWLAND ANGELL IN CHICAGO SCHOOL)

जेम्स राँलैड एंजिल (james rowland angell,1867-1949)

जेम्स राँलैड एंजिल का जन्म एक शिक्षित परिवार में हुआ था |उनके पिता भरमौंट विश्वविद्यालय के अध्यक्ष थे ,जो बाद में मिशिगन विश्वविद्यालय के भी अध्यक्ष हुए |मिशिगन विश्वविद्यालय में एंजिल ने जॉन डीवी से शिक्षा ग्रहण की और बाद में हारवार्ड विश्वविद्यालय जाकर विलियम जेम्स से भी शिक्षा ग्रहण किये |एंजिल ने एम$_{o}$ ए$_{o}$ की उपाधि हारवार्ड विश्वविद्यालय से प्राप्त की |परन्तु दुर्भाग्यवश वे पी$_{o}$ एच$_{o}$डी$_{o}$ की उपाधि प्राप्त नहीं कर पाए हालांकि उन्हें अपने पुरे जीवन वृति में विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा 35 सामान्य (honorary)डॉक्टरीये उपाधि प्राप्त हुआ था |वे 1894 में मनोविज्ञान के प्राचार्य के रूप में शिकागो विश्वविद्यालय में अपना योगदान दिया |जहाँ

उनके शिक्षक जॉन डीवी पहले से ही कार्यरत थे |इस विश्वविद्यालय में एंजिल ने दर्शनशास्त्र विभाग से मनोविज्ञान को अलग किया और जब जॉन डीवी शिकागो विश्वविद्यालय छोरकर कोलंबिया विश्वविद्यालय चले गये ,तो वे मनोविज्ञान विभाग के अध्यक्ष बन गये |उन्होंने इस विभाग को शिक्षण तथा शोध का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनाया जे॰बी॰ वाटसन तथा हार्वे कार्र इस केन्द्र के मुख्य छात्र थे |

शिकागो विश्वविद्यालय में योगदान करने के बाद एंजिल,ए॰डब्ल्यु॰ मुर्रे के साथ मिलकर एक शोध-पत्र प्रकाशित किया |इस पत्र का प्रकाशन साइकोलॉजिकल रिभीऊ(psychological review,1896) के उसी अंक में हुआ था जिस अंक में प्रतिवर्त्तधनु पर जॉन डीवी के पत्र का प्रकाशन हुआ था| 1903 में वे एक दूसरा शोध पत्र प्रकाशित किये जिसमे प्रकार्यवादी मनोविज्ञान तथा संरचनावादी मनोविज्ञान के बीच के सम्बन्ध पर प्रकाश डाला |1904 में वे एक पाठ्य-पुस्तक जिसका नाम “psychology: An introductiors of the structure and function of human consciousness” था का प्रकाशन किया |यह पुस्तक काफी सफल पुस्तक रहा और 1908 तक इसके चार संस्करण हुए |इस पुस्तक में एंजिल ने उन सारे तत्वों को इकट्ठा किया जो उस समय मनोविज्ञान के बारे में ज्ञात थे |इस पुस्तक में मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा गया तथा स्नायु मंडल ,संवेदन ,प्रत्यक्षण ,निर्णय ,भाव,संवेग, इच्छा आदि पर अलग अलग अध्ययाओ में चर्चा की गयी |प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के बारे में उनके स्पष्ट विचारो की हमें उनके उस अध्यक्षीय भाषण में भी मिलता है जिसे वे 1906 में अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संघ को दिए थे |उनका यह भाषण ‘दी प्रोविंस ऑफ़ फंक्शनल साइकोलॉजी’ (the provinee of functional psychology) शीर्षक के तहत 1907 में प्रकाशित किया गया

|इस भाषण में प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के तीन अलग अलग अवधारणाओं का वर्णन किये थे तीनो अवधारणाएँ निम्नलिखित है :-

(i)प्रकार्यवाद को संरचना से विपरीत बतलाया गया |संरचनावादियों का सम्बन्ध चेतना के अंतर्वस्तु से था जबकि प्रकार्यवादीओं का समबन्ध मानसिक प्रक्रियाओं के संचालन से था| दुसरे शब्दों में ,संरचनावाद का मुख्य कार्य चेतन को उसके विभिन्न तत्वों में विश्लेषित करता था जबकि प्रकार्यवादीओं का मुख्य कार्य इस तथ्य का पता लगाना था की मानसिक प्रक्रिया किस तरह संचालित होती है तथा इसकी उपयोगिता व्यक्तियों के लिए क्या हो सकता है | प्रकार्यवादीओ द्वारा अध्ययन किया जाने वाला प्रकार्य एक स्थिर एवं स्थायी प्रकार्य होता है ना की संरचनावादियों द्वारा अध्ययन किये गये चेतन का मात्र एक झलक |

(ii) प्रकार्यवादी मनोविज्ञान “चेतन के मूल उपयोगिताओं का मनोविज्ञान है |मन हमेशा प्राणी की आवश्यताओं तथा पर्यावरणके बीच मध्यस्थता करता है |अतः किसी भी मनोवैज्ञानिक प्रकार्य को एक अनुकूलि प्रक्रिया ही माना जा सकता है |चूँकि ये प्रकार्य पृथक घटना ना होकर प्रकार्यवादी प्राणी का एक अंश होता है ,अतः वे प्राणी को पर्यावरण के साथ समायोजन करने में काफी मदद करते है |ऐसे अनुकूलनों से प्राणी का अस्तित्व बना रहता है |

(iii)प्रकार्यवादी मनोविज्ञान मन शरीर समस्या से निपटने का एक विशेष विधि है |अतः इसे मनोदैहिक संबंधो का मनोविज्ञान कहा जा सकता है | इस मनोविज्ञान का रिश्ता प्राणी तथा पर्यावरण के सम्पूर्ण मनोदैहिक सम्बन्ध से है|इसलिए प्रकार्यवादी मनोविज्ञान में गैर अचेतन तथा आदतीय व्यवहार का भी अध्ययन किया जाता है |इस अवधारणा के अनुरूप तब मन तथा शरीर को एक दुसरे से अलग नहीं किया जा

सकता है और ये दोनों एक ही समष्टि में सन्निहित होते है | इस दोनों के बीच सतत अंतक्रियाएँ होती है | एंजिल ने अपने अध्यक्षीय भाषण में यह भी स्पष्ट कर दिया था की प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के ये तीनों अवधारणाएँ एक दुसरे से स्वतंत्र न होकर सम्बंधित है | प्रथम दो अवधारणाओं से प्रकार्यवादी मनोविज्ञान अपने आप को चेतन अनुभूति के अध्ययन तक सिमित रखने का प्रयास करता है तथा तीसरे अवधारणा द्वारा इसका कार्य क्षेत्र थोड़ा विस्तृत हो जाता है क्योंकि इसमें गैर चेतन तथा आदतीय व्यवहार का अध्ययन भी शामिल हो जाता है |